SEMESTER - II
CC - I X
UNIT - III
social and political Dynamics of democracy

Vetted by:

प्रो.(डॉ.)सुरेंद्र कुमार
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय पटना।
संपर्क- 9835463960

डॉ. विद्यानन्द विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय पटना
, पटना संपर्क सूत्र
9472084115

डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक आयाम।

- परिचय - अपनी विलक्षण क्षमताओं के आधार पर एक विशिष्ठ स्थान बना चुके डॉ. भीम राव अम्बेडकर का जीवन अनेक प्रकार की विविताओ से परिपूर्ण हैं।उनकी सर्वाधिक ख्याति एक संविधान निर्माता तथा समाज के उपेक्षित एवम वंचित वर्ग के अधिकारों की रक्षा हेतु संघर्षरत योद्धा के रूप में ही अधिक है।

- डा. अम्बेडकर जी के जीवन में एक महत्वपूर्ण बात हमको दिखलाई देती है वह यह है कि वे पुरानी सभी मान्यताओं, आदर्शों और व्यवस्थाओं को ध्वस्त करना नहीं चाहते तथा किसी जाति या वर्ण के वे शत्रु नहीं हैं, जो अच्छा है, वह सभालकर रखना और जो अनावश्यक है उसे हटाना ही उन्हें अभीष्ट है। इस दृष्टि से वे एक 'आन्दोलनकारी' हैं।डा. अम्बेडकर यह जानते थे कि भारतीय दर्शन के मौलिक तत्व बहुत उदात्त हैं। किन्तु, विकृतियों, रूढ़ियों, ढोंग, पाखण्ड, कर्मकाण्डों एवं परपराओं का अनावश्यक अतिरेक, जिसने उस समस्त दर्शन जो सभी मनुष्यों को समान मानता है तथा करुणा, प्रेम, ममता, बन्धुत्व, दया, क्षमा, श्रद्धा आदि सद्गुणों का सन्देश देता है एवं उसका संरक्षण भी करता है, को ढक लिया है, वही हमारे परिवर्तन का मूलाधार बना रहे।सुधारवादी आन्दोलन को चलाते समय हर क्षण यह बात स्मरण रखनी होगी कि यदि किसी भी कारण से आपसी प्रेम, ममता और बन्धुत्व का भाव समाप्त हो गया तो परिवर्तन का यह संघर्ष एक क्रूर वैमनस्य में बदलकर अधिकतम अधिकारों को पाने की इच्छा रखने वाले गृहयुद्ध में बदल जायेगा। अत: वे कहते थे कि हम यह बात ध्यान में रखें कि हमारे देश में सभी सद्गुणों का दाता, 'धर्म' है। इस 'धर्म' को अपने विशुद्ध रूप में पुनर्स्थापित करना है।

- ढोंग, पाखण्ड, भेदभाव, कर्मकाण्ड आदि के परे 'धर्म' में अन्तर्निहित महान सद्गुणों को संरक्षित करते हुए हमें आगे बढ़ना है। कुछ लोग कहते हैं कि धर्म की मानव जीवन में कोई आवश्यकता नहीं है। डा. अम्बेडकर लोगों के इस मत से सहमत नहीं थे। उन्होंने कहा- 'कुछ लोग सोचते हैं कि धर्म समाज के लिए अनिवार्य नहीं है, मैं इस दृष्टिकोण को नहीं मानता। मैं धर्म की नींव को समाज के जीवन तथा व्यवहार के लिए अनिवार्य मानता हूं।'मार्क्सवादी लोग धर्म को अफीम कहकर उसका तिरस्कार करते हैं। धर्म के प्रति यह विचार मार्क्सवादी दृष्टिकोण की आधारशिला है। डा. अम्बेडकर मार्क्सवादियों के इस मत से सहमत नहीं थे। वे इस बात से पूरी तरह आश्वस्त थे कि 'धर्म' मनुष्य को न केवल एक अच्छा चरित्र विकसित करने में सहायता करता है अपितु वह समाज के संरचनात्मक पक्षों को भी निर्धारित करता है। चरित्र एवं शिक्षा को वे धर्म का ही अंग मानते थे।वे कहते थे 'धर्म' के प्रति नवयुवकों को उदासीन देखकर मुझे दु:ख होता है।' डा. साहब का मानना था कि 'धर्म' कोई पंथ या कर्मकाण्ड नहीं है। धर्म के नाम पर हो रहे निरर्थक ढोंग, पाखण्ड तथा व्यर्थाडम्बरों को वे धर्म नहीं मानते। धर्म से उनका तात्पर्य है- व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं को आदर्श रूप से संचालित करने वाला 'नैतिक दर्शन', जो सभी के लिए श्रेयस्कर है वही 'धर्म' है।

- डॉ. अम्बेडकर के जीवन और कार्यों के कुछ महत्वपूर्ण आयाम।
- सामाजिक आयाम
- संवैधानिक आयाम
- नारीवादी आयाम
- लोकतांत्रिक आयाम
- राजनैतिक आयाम
- धार्मिक आयाम

धन्यवाद